प्रातः क्लास 26-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्तिः शिवभगवानुवाचः अभी शिवभगवान निराकार को तो सभी मानते हैं। एक ही निराकार शिव हैजिसकी सभी पूजा करते हैं। बाकी जो भी देहधारी हैं उन सभी की साकार है। पहले2 निराकार आत्मा थी। फिर साकार बनी है। साकार बनते हैं शरीर में प्रवेश करते हैं तब उनका पार्ट चलता है। मूलवतन में तो कोई भी पार्ट है नहीं। जैसे एक्टर्स घर में हैं तो नाटक का पार्ट नहीं है। स्टेज पर आने से पार्ट बजाते हैं। आत्मायें भी यहां आकर पार्ट बजाती है। पार्ट पर ही सारा मदार रहता है। आत्मा में तो कोई फर्क है नहीं। जैसे तुम बच्चों की आत्मा है वैसे इनकी आत्मा भी है। बाप परम पिता परमात्मा क्या करते हैं, उनका आक्युपेशन क्या है वह जानना है। कोईराष्ट्रपति है, राजा है, यह आत्मा का आक्युपेशन है ना। यहपवित्रदेवतायें हैं इसलिए उन्हों को पूजा जाता है। अभी तुम बच्चे समझते हो यह पढ़ाई पढ़ कर यहल०ना० विश्व के महाराजा-महारानी बने हैं। किसने बनाया? परम आत्मा ने। और कोई बड़ी बात नहीं। तुम आत्मायें भी पढ़ते हो। बड़ाई यह है जो बाप आकर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं और राजयोग भी सिखलाते हैं। कितनासहज है। उनको कहा जाता है राजयोग। बाप को याद करने से हम सतोप्रधान बन जाते हैं। बाप तो है ही सतोप्रधान। उनकी कितनी महिमा गाते रहते हैं। भक्ति मार्ग में कितना फूल दूध आद चढ़ाते थे, समझ कुछ भी नहीं थी। देवताओं को पूजते थेसमझ कुछ भी नहीं। उन्होंने क्या किया जो फूल-दूध आद चढ़ाते हैं। उसने क्या कर्तव्य किया है जो इतना पूजते हो। देवताओं का तो फिर भी मालूम है। वह हैं स्वर्ग के मालिक। उन्हों को किसने बनाया यह भी पता नहीं हैं। पूजा भी करते हैं शिव की। परन्तु यह ख्याल में नहीं कि यह भगवान है। भगवान ने उन्हों को ऐसा बनाया है। फूल चढ़ाते-दूध चढ़ाते है कितनी भक्ति करते हैं, है सभी अनजान। तुम से भी बहुतों ने शिव की पूजा की होगी। अभी तुम समझते हो आगे कुछ नहीं जानते थे। उनका आक्युपेशन क्या है, क्या सुख देते हैं कुछ भी पता नहीं हैं। क्या यह देवतायें सुख देते हैं? भल राजा रानी प्रजा को सुख देते हैं परन्तु उन्हों को तो शिव बाबा ने ऐसा बनाया ना। बलिहारीउनकी है। यह तो सिर्फ राजाई करते हैं। प्रजा भी बन जाते हैं। बाकी यह कोई का कल्याण नहीं करते हैं। अगर करते भी हैं तो अल्पकाल के लिए। अभी तुम बच्चों को बाप बैठपढ़ाते हैं। उनको कहा जाता है कल्याणकारी। बाप अपना परिचय बैठ देते हैं। मेरी तुम पूजा करते थे नालिंग की। उनको परमआत्मा कहते थे। परम आत्मा सो परमात्मा हो जाता। परन्तु यह नहीं जानते कि यह क्या करते है। बस सिर्फ कह देंगे कि वह सर्वव्यापी है। नाम रूप से न्यारा है। नाम-रूप से न्यारा है फिर उस पर दुध आद चढ़ाना शोभता नहीं है। आकार है तब तो उस पर चढ़ाते हैं ना। उनको निराकार तो कह नहीं सकते। तुम से मनुष्य आरग्यु बहुत करते हैं। बाबा के पास भी आकर आरग्यु ही करेंगे। फालतू माथा खपावेंगे। फायदा कुछ भी नहीं। यह समझाना तो तुम बच्चों का काम है। तुम्हारा बैठ माथा खपावे। हमारा तो न खपावे ना। बाबा के ध्यान में तो यह सभी रिढ बकरियां हैं। उन्हों की एक्टविटी ही ऐसी है। कुछ नहीं जानते। अभी तुम बच्चे जानते हो बाबाने हमको रिढ बकरियों से कितना उंच्च बनाया है। यह पढ़ाई है ना। बाप टीचर बन पढ़ाते हैं। तुम मनुष्य से देवता बनने लिए पढ़ रहे हो। देवी-देवतायें सतयुग में ही होते हैं। कलियुग में तो होते ही नहीं। रामराज्य ही नहीं जो पवित्र रह सके। देवी देवतायें जो थे वे फिर वाममार्ग में चले जाते हैं। है तो वह भी तुम्हारे जैसे मनुष्य। बाकी जैसे चित्र दिखाई हैऐसे है नहीं। जगतनाथ के मंदिर में तुम देखेंगे काले चित्र हैं। बाप कहते हैं भाया जीते जगत जीत बनो तो उन्हों ने फिर जगतनाथ नाम रख दिया है। उपर में सभी गन्दे चित्र दिखाये हैं। देवतायें वाममार्ग में गये तो काले बन पड़े। उनकी भी पूजा करते रहते हैं। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं हैं कि कब हम पूज्य थे। 84जन्मों काहिसाब किसकी भी बुधि में नहीं हैं। पहले पूज्य सतोप्रधान, फिर 84 जन्म लेते2तमोप्रधान पुजारी बन पड़े हैं। सतोप्रधान है पूज्य। तमोप्रधान है पुजारी। वाममार्ग में जाने से काले बन जाते हैं। रघुनाथ मंदिर में भी काले चित्र दिखाते हैं। अर्थ तो उनका

कुछ भी समझते नहीं। अभी तुम बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं। ज्ञान-चिक्षा पर बैठ गोरे बनते हो। काम-चिक्षा पर बैठ काले बन जाते हो। देवतायें वाम-मार्ग में जाकर विकारी बन पड़ते। फिर उनका नाम तो देवता रख नहीं सकते। वाम-मार्ग में जाने से काले बन पड़े हैं। यह निशानी दिखाई है। कृष्ण काला राम भी काला। शिव को भी काला बना देते हैं। सभी काले शिव का लिंग भी काला बना देते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो शिवबाबा तो बाला बनता ही नहीं है। वह तो हीरा है जो तुमको भी हीरा जैसा बनाते हैं। वह तो कब काला बनता नहीं। उनको फिर काला क्यों बना दिया है। कोई काला होगा उसने बैठ काला बना दिया है। शिव बाबा कहते हैं हमने क्या दोष किया है जो मुझे भी काला बना दिया है। मैं तो आता ही हूं सभी को गोरा बनाने। मैं ~~मनुष्य~~ तो सदैव ही गोरा हूं। फिर काला क्यों? मनुष्य की ऐसी पत्थर बुधि बन पड़ी है जो कुछ भी समझ नहीं। शिव बाबा तो है ~~मुसा~~ हसीन। सभी को ~~स~~ हसीन बनाने आते हैं। मैं तो स्वर गोरा मुसाफिर हूं। मैंने क्या किया जो मुझे काला बनाया है। अभी तुमको भी गोरा बनना है। ऊंच पद कैसे पाना है वह तो बाप ने समझाया है पहलो फादर। सभी कुछ बाप के हवाले कर दिया। वह कब भूखा थोड़े ही मर सकते हैं। फादर को देखो कैसे सभी कुछ दे दिया। भल साधारण थे। न बहुत गरीब न बहुत शाहुकार। बाबा अभी भी कहते हैं तुम्हारा खान-पान बीच का साधारण होना चाहिए। न बहुत ऊंच न बहुत नीच। बाप ही सभी शिक्षा देते हैं ना। यह भी देखने में तो साधारण ही आते हैं। तुमको कहते हैं कहां है भगवान। दिखाओ। और आत्मा बिन्दी है, उनको देखेंगे क्या। यह तो जानते हो आत्मा का सा० इन आंखों से होता ही नहीं। तुम कहते हो हमको भगवान पढ़ाते हैं। तो जरूर कोई शरीरधारी होगा ना। निराकार कैसे पढ़ावेंगे। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं हैं। जैसे तुम आत्मा हो। शरीर द्वारा पार्ट बजाते हो। आत्मा ही बोलती है शरीर द्वारा। तो आत्मा वाच। परन्तु आत्मावाच अक्षर शोभता नहीं है। आत्मा तो है वानप्रस्त। वाणी से परे। वाच तो शरीर से ही करेंगे ना। वाणी से परे आत्मा सिर्फ आत्मा रहजाती। वाणी में आना है तो शरीर तो चाहिए ना। बाप भी ज्ञान का सागर है तो जरूर किसका शरीर पकड़ेगा ना। उसको रथ कहा जाता है। नहीं तो वह सुनावे कैसे। यह रथ भी कैसे बना यह तुम समझ सकते हो। बाप पतित से पावन बनाने की बैठ शिक्षा देते हैं। प्रेरणा की बात ही नहीं। यह तो ज्ञान की बातें हैं। वह आवे कैसे। किसके शरीर में आवे। कोई को भी पता नहीं हैं सिवाय तुम्हारे। रचयिता ही बैठ खुद रचना का परिचय देते हैं। मैं कैसे और किस रथ में आता हूं। बच्चे जानते नहीं बाप का रथ कौन सा है। बहुत ही मुंझे हुये हैं। किस किस का रथ बना देते हैं। जनावर आद में तो आ न सके। आवेंगे तो मनुष्य में ही। बाप कहते हैं मैं किस मनुष्य में आऊं। यह तो समझ नहीं सकते हैं। आना भी भारत में ही होता है। भारतवासियों में भी किसके तन में आऊं। क्या प्रजीडेन्ट वा साधु महात्मा के रथ में आऊंगा। ऐसे भी नहीं है कि पवित्र रथ में आना है। यह तो है ही रावण राज्य। गायन भी है दूर देश का रहने वाला आया देश पराया। यह भी बच्चों को पता है भारत अविनाशी खण्ड है। उनका कब विनाश होता नहीं। अविनाशी है। बाप अविनाशी भारत खण्ड में आते हैं। किस तन में आते हैं वह खुद ही बतलाते हैं। और तो कोई जान न सके। मनुष्य तो ढेर हैं। तुम जानते हो कोई साधु महात्मा में भी आ न सके। वह है ही हठयोगी निवृति मार्ग वाले। बाकी रहे भारतवासी भक्त। अभी भक्तों में भी किस भक्त में आवे। भक्त भी बड़ा चाहिए जिसने बहुत भक्ति की हो। भक्ति का फल देने वाले भगवान को आना पड़ता है। भारत में ~~भक्त~~ भक्त तो ढेर हैं। कहेंगे यह बड़ा भक्त है। इसमें आना चाहिए। ऐसे तो बहुत ही भक्त बन पड़ते हैं। कल को वैराग्य आ जाये भक्त बन जाये। वह तो इस जन्म का भक्त होगा ना। उसमें तो आवेंगे नहीं। बाप समझाते हैं इस जन्म के जो भी भक्त हैं उनमें नहीं आता हूं। मैं उस में आता हूं जिसने पहले2 भक्ति शुरु की है। उन्हों को भी भक्ति का फल मिलना है। तुम भी समझते हो सब से बड़ा भक्त कौन है। जिसने पहले2 भक्ति शुरु की है। द्वापरसे लेकर ~~भक्ति~~ भक्ति शुरु हुई है। यह हिसाब किताब तो कोई समझ न सके। कितनी गुप्त बातें हैं। मैं आता उन में हूं जो पहले2

भक्ति शुरू करते हैं। नम्बरवन जो पूज्य था वही फिर नम्बरवन पुजारी भी बनेगा। खुद कहते हैं यह रथ ही पलटे नम्बर में जाते हैं। फिर 84 जन्म भी यही लेते हैं। मैं इनके ही बहुत जन्मों के अन्त में के भी अन्त में प्रवेश करता हूं। उनको ही फिर नम्बरवन राजा बनना है। यही बहुत भक्ति करते हैं। भक्ति का फल भी इनको मिलना चाहिए। बाप दिखलाते हैं बच्चों को कि देखो यह मेरे ऊपर वारी कैसे गया। सभी कुछ दे दिया। इतने सभी बच्चों को सिखलाने लिए तो फिर धन भी चाहिए ना। कांची में तुम बच्चियां कित नी ढेर भागी। साथ में तो कुछ भी लेकर नहीं आई। तुमको क्या हुआ। दिन में कोई प्रोग्राम बनाया नहीं। बैठे2 रात को क्या हो गया जो निकल पड़ी। यह तो कहां भागा नहीं। यह सेफ्टी में था। तो क्या कोई भूख मरते हैं क्या। उनके साथ जो भी आये वे भूख मरते हैं? कुछ भी नहीं। ईश्वरीय प्रसाद मिलता रहता है। ईश्वर का यज्ञ रचा हुआ है। खुद आकर इस में बैठ रुद्र ज्ञान यज्ञ रचते हैं। इसको पढ़ाई भी कहा जाता है। रुद्र शिव बाबा जो ज्ञान का सागर है उसने ही यह यज्ञ रचा है ज्ञान देने लिए। अक्षर बिल्कुल ठीक है। राजस्व स्वराज्य के लिए यज्ञ ...स्वराज्य पाने लिए यज्ञ। इनको यज्ञ क्यों कहते हैं, यज्ञ में तो वह लोग आहुति आद बहुत कुछ डालते हैं किचड़पट्टी। तुम तो पढ़ते हो आहुति क्यों डालते हो। तुम जानते हो हम पढ़कर होशियार हो जावेंगे फिर सारी दुनिया इसमें स्वाहा हो जावेगी। यज्ञ में पिछाड़ी के टाईम जो भी सामग्री होती है सभी डाल देते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो हमको बाप पढ़ा रहे हैं। बाप है तो बहुत ही साधारण। मनुष्य क्या जाने। उन बड़े2 आदमियों की तो बहुत ही महिमा होती है। बाप कितना साधारण बैठा है। मनुष्य को कैसे पता लगे। यह तो दादा जवाहरी था। शक्ति तो कोई देखने में नहीं आती। सिर्फ इतना ही कह देते हैं इनमें कुछ शक्ति है। बस। यह नहीं समझते हैं कि इन में सर्वशक्तिवान बाप है। इन में शक्ति है परन्तु वह भी आई कहां से। बाप ने प्रवेश किया ना। जो उनका खजाना है वह ऐसे थोड़े ही दे देते हैं। तुम योगबल से लेते हो। वह तो सर्वशक्तिवान है ही। उनकी शक्ति कहां चली नहीं जाती है। परमात्मा को सर्वशक्तिवान क्यों गाया जाता है यह भी कोई नहीं जानते हैं। कृष्ण को स्वदर्शनचक्र दे दिया है जिससे कृष्ण सभी को गला काटते रहते। सिक्ख लोग भी स्वदर्शनचक्र चक्र का कापी किया है। लड़ते हैं तो चक्र से गला काट देते हैं। स्वदर्शनचक्र हथियार रूप में समझ लिया है। बाप कहते हैं काम कटारी। तो वह कटारी हथियार समझ लेते हैं। यह सभी हिंसक निशानियां रख दी है। बाप आकर सभी बातें समझाते हैं। पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं मैं जिसमें प्रवेश करता हूं इनमें तो पूरी कट चढ़ी हुई है। इनमें ही मैं प्रवेश करता हूं। पराया देश, पराये शरीर में इनके ही बहुत जन्मों के अन्त में आता हूं। कट जो चढ़ी हुई है वह तो कोई उतार न सके सिवाय एक सतगुरु के। कट उतारनेवाला एक ही है। वह एपस्युलिटली पवित्र है। यह भी तुम समझते हो। यह भी बुधि में बिठाने लिए टाईम चाहिए। तुम बच्चों को बाप सभी कुछ समझा देते हैं। बाप भी विल कर देते हैं है बाप ज्ञान का सागर है, शान्ति का सागर है। सारा विल कर देते हैं बच्चों को। सभी कुछ समझाते हैं। इन पर पूरी कट चढ़ी हुई है। आते भी पुरानी दुनिया में हैं। सभी पतित हैं। सब से जास्ती पतित कौन है। यह बाप बतलाते हैं। मैं उस रथ में ही प्रवेश करता हूं। जो हीरे जैसा था वही कौड़ी जैसा बना है। वह भल इस समय करोड़पति हैं परन्तु अल्पकाल के लिए। सभी का खलास हो जावेगा। वर्थ पाउण्ड तो तुम बनते हो। अभी तुम भी स्टुडन्ट हो। यह भी स्टुडन्ट है। यह भी बहुत जन्मों के अन्त में है। कट चढ़ी हुई है। जो बहुत अच्छा पढ़ते हैं उनमें ही बहुत कट चढ़ती है। वही फिर सबसे पतित बनते हैं। उनको फिर पावन बनना है। यह ड्रामा बना हुआ है। यह कहते हैं मैं जो सबसे पावन बनता हूं फिर 84 जन्मों बाद सब से पतित भी बनता हूं। बाप तो रीयल बात बताते हैं ना। बाप है सत्य। वह कब उल्टी नहीं बतलाते। यह सभी बातें मनुष्य को समझ न सके। तुम बच्चों को बिगर मनुष्यों को कैसे पता पड़े। कहते हैं इनको ब्रह्मा कैसे कहते हैं, परमात्मा ने इनमें प्रवेश क्यों किया। यह अभी तुम समझते हो।

ब्राहमण कुल है सबसे ऊंचा।क्योंकि बाप पढ़ाते हैं।ब्राहमण से देवता बनाते हैं। बाप के बच्चे हो गये ना। रूहानी बाप के बच्चे।जिनको बाप बच्चे2 कह बैठ पढ़ाते हैं।श्रीमत पर चलते रहते हैं।शिव बाबा इसमें बैठ बनवाते रहते हैं।करन-करावनहार है ना।जो भी करते हैं और कराते भी हैं।कुछ खुद करते हैं कुछ कराते भी है। प्रैक्टीकल में अभी तुम समझरहे हो।दूसरी तो कोई चीज़ है नहीं।शरीर तो पुराना ही लेना है।क्योंकि वनवासी है।तुम भी वनवासी हो। वानप्रस्त में जाने वाले हो।वानप्रस्त कहो वा वनवासी कहो बात एक ही है।वाणी से परेजाकर वास करना है।शादी में वनवा में बैठते हैं ना।जाना तो चाहिए स्वर्ग में। परन्तु वह तो और ही नर्क में जाते हैं।भल बड़े घर के होते हैं उनको भी पुराने कपड़े आद पहनाकर वनवास में बिठाते हैं। जंगल में जाने वाले को भी वनवासी कहते हैं। तो बाप क्लीयर कर समझाते हैंवह कहां जाते हैं, तुम कहां जाते हो।

समझाते देखो कैसे हैं।यह ही समझने की मुश्किलात है। आत्मा बोल रही है। आत्मा किस में बोलेगी।जनावर आद में तो बोल न सके। जरूर मनुष्य चाहिए।बाप खुद ही कहते हैं मैं तो एपस्युलिटली क्लीयर हूं।मेरे में कोई खाद नहीं है।मैं सदैव पिवत्र ही हूं तब तो मुझे बुलाते हो। मैं सारे विश्व का सोनार है। सभी धातू मिक्स हो गये हैं।अभी मैं आत्मा को गला बिल्कुल पवित्र बना देता हूं।धोबी भी हूं।अभी तुम आत्मा को भी समझ गये हो। आत्मा ही सभी ग्रहण करती है।सतयुग से लेकर कलियुग तक आत्मा ही पार्ट बजाती है। 84 जन्मों का पार्ट है। आत्मा पवित्र है तो शरीर भी पवित्र मिलता है। यह सभी बातें बाप बैठबच्चों को समझाते हैं।समझने लिए तो टाईम चाहिए ना।प्रदर्शनी में कोई थोड़ा समय आवेंगे क्या समझेंगे।इसमें तो फुर्सत चाहिए आकर समझे मनुष्य से देवता विश्व का मालिक कैसे बन सकते हैं। बाप कहते हैं हे आत्माएं तुम स्वयं पवित्र नहीं हो। सच तो पवित्र बनने लिए बुलाते हो। अभी फिर पावन बनना है। बाप ही बच्चे2 कह समझाते रहते हैं। तुम तो बच्चे2 नहीं कहेंगे ना।तुम आपस में भाई2 हो। बाप बच्चे2 कह बात करेंगे तोबाबा का झट तीर लगेगा। बाप बच्चों को कहेंगे लज्जा नहीं आती।तुम बाप को याद नहीं कर सकते हो। योग अक्षर कहते हो तो बाबा समझते हैंकच्चे हैं बहुत।योग अक्षर सन्यासियों आद का सुना हुआ है। वह तो हठयोगी योग आद लगाते हैं। यहां तो बाप को याद करना है। फ्लाना टीचर हमको पढ़ाते हैं।याद रहता है ना।ऐसे कहेंगे क्या हमारा टीचर साथ योग है।भारत में योग के लिए मनुष्य कितना माथा मारते हैं। तुम से भी पूछते हैं कुछ आईडिया बताओ अथवा युक्ति बताओ। ब्रहमा कुमारियों से डरते हैं। तुम मौत सिखलाते हो।जानते हो हम बाबा के पास मरना सीखने जाते हैं। आत्माओं को अपने शरीर छोड़ करघर जाना है। बाप आते ही हैं मौत देने लिए। सन्यासी लोग तो ऐसी शिक्षा दे न सके। मौत किसको पसन्द आवे बड़ा मुश्किल है। तुम कोशिश करते हो अभी जल्दी2 जावें परन्तु जा नहीं सकते हो सिवाय कर्मातीत अवस्था के। बुधि में कर्मातीत अवस्था को पाकर हम घर जावें।84 जन्म भटके हैं। अभी जल्दी जावें।सिर पर बोझा बहुत है। जितना याद करेंगे उतना ही कट उतरेगी।ज्ञान में आने बाद पाप किया तोउसका फिर सौगुना दण्ड हो जाता है।बाप की निन्दक ठौर न पाये।ऐसे2पाप भी करते हैं।मुख्य बात तो है विकार का। औरों को भी विकार में ढकेलते हैं। तो पाप बहुत ही चढ़ जाता है। तुम कहते हो हमको पढ़ाई से यह बनना है।तो कह देते हैं यह तुम्हारी कल्पना है।अरे प्राईम मिनिस्टर, प्रजीडेन्ट, आद बनते हैं क्या कल्पना है। सृष्टि का भी चक्र फिरता हैयह कल्पना है? युनिवर्सिटी में पढ़ते हैं क्या यह कल्पना है?अक्षर ऐसे बोलते हैंजो खुद भी समझ न सके।कल्पना का अर्थ क्या।जो बुधि में आया वह बना दिया।तो ऐसे2 भी आते हैंउनसे हमको क्या बात करनी है।बाप गसा तो नहीं कर सकते ना।कोई गसा करते हैं तो बाप की निन्दा कराते हैंइनको भी डर रहता है जैसे कर्म में करंगा • तुमको भी समझना है।अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।